खण्ड 10, संख्या 6

जून, 2011

जनसंदेश

भारतीय संसदीय संस्थान – जनसंख्या एवं विकास का द्विमासिक न्यूज़लैटर

पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम पर विशेषांक

विधायकों/पंचायती राज संस्थाओं एवं राय नेताओं हेतु पोलियो उन्मूलन पर सामुदायिक भागीदारी संबंधी कार्यशाला

24 परगना दक्षिणी जिला (पश्चिम बंगाल), 23 जून, 2011

unicef

भारत में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, विश्व स्वास्थ्य संगठन संबंधी राष्ट्रीय पोलियो निगरानी परियोजना, यूनीसेफ, रोटरी इंटरनेशनल तथा अमेरिकी रोग नियंत्रण केंद्र के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पांच वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को मौखिक पोलियो का टीका देकर भारत में पोलियो का उन्मूलन करना है। अफगानिस्तान, नाईजीरिया एवं पाकिस्तान के साथ भारत विश्व में चार पोलियो स्थानिकमारी (एन्डीमिक) वाले देशों में शामिल है। भारत में पिछले कुछ वर्षों में पोलियो संचरण को रोकने की दिशा में अत्यधिक प्रगति हुई है। पोलियो के मामलों की संख्या 2009 में 741 की तुलना में 2010 में गिरकर 42 के रिकार्ड स्तर पर आ गयी।

भारत में, जनवरी 2011 में पश्चिम बंगाल के हावड़ा ज़िले में पोलियो का केवल एक मामला ही प्रकाश में आया। इस वर्ष उत्तर प्रदेश एवं बिहार जैसे पारंपरिक पोलियो एन्डीमिक वाले राज्यों से पोलियो के एक भी मामले की सूचना नहीं है।

पोलियो उन्मूलन एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को जागरूक करने के उद्देश्य से भारतीय संसदीय संस्थानः जनसंख्या एवं विकास द्वारा

उपर चित्रों में: श्रीमति शमीमा शेख, सभापति, ज़िला परिषद, दीप जला कर कार्यशाला का उद्घाटन करते हुऐ। इस अवसर पर (अग्रिम पंक्ति में बांये से) डा. शिखा अधिकारी, सीएमएचओ, श्री मनमोहन शर्मा, आईए.पीपीडी, श्री एम. मंडल, उपाध्यक्ष, ज़िला परिषद, (पिछली पंक्ति में) डा. सौमित्र रॉय, यूनिसेफ, डा. तरुण रॉय, स्वास्थ्य विभाग, एवं डा. संजय बोस, एडीएम, भी उपस्थित थे।

सी.एम. जातुया
C.M. JATUA

सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
INFORMATION & BROADCAST
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी है कि भारतीय संसदीय संस्थानः जनसंख्या एवं विकास, नई दिल्ली विधायकों/पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों तथा राय नेताओं के लिए पोलियो उन्मूलन संबंधी सामुदायिक भागीदारी पर 24 परगना के दक्षिणी जिले (पश्चिम बंगाल) में 23 जून, 2011 को कार्यशाला आयोजित कर रहा है।

पश्चिम बंगाल एवं भारत में इस तरह के कार्यक्रम संबंधी संगोष्ठी के माध्यम से पोलियो उन्मूलन के लिए सरकार के साथ–साथ गैर–सरकारी संगठन तथा विभिन्न नागरिक समाज एक साथ मिलकर लड़ाई लड़ रहे हैं।

मैं इस संगोष्ठी एवं कार्यक्रम की भव्य सफलता की कामना करता हूँ।

सी.एम. जटुआ

यूनीसेफ, दिल्ली के सहयोग से राम ब्रह्मा सान्याल स्मृति सदन, पश्चिम बंगाल के 24 परगना दक्षिणी जिले में 23 जून, 2011 को पंचायती राज संस्थाओं/निर्वाचित जनप्रतिधियों के लिए एकदिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला का उद्घाटन श्रीमती शमीमा शेख, सभाधिपति, ज़िला परिषद द्वारा किया गया एवं इसकी अध्यक्षता श्री मानबेन्द्र मंडल, उपाध्यक्ष, जिला परिषद, 24 परगना दक्षिणी ज़िला द्वारा की गयी। श्री निर्मल चन्द्र मंडल, विधायक; श्रीमती मोमिता साहा, विधायक; श्री संजोय बोस, एडीएम, जिला परिषद; डा. सिधो राय, यूनीसेफ; डा. शिखा अधिकारी, मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी; डा. तरूण राय एवं डा. रॉड कर्टिस, संचार विशेषज्ञ (पोलियो) यूनीसेफ, दिल्ली; विशेष अतिथि वक्ताओं में थे।

जिला परिषद सदस्य, ब्लॉक समिति सदस्य एवं प्रधानों सहित लगभग 100 पंचायती राज संस्था सदस्यों तथा नागरिक समाज (अधिकतर

संपादकीय

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं स्वयंसेवकों के अथक प्रयासों के लिए शुक्रिया, जिसके फलस्वरूप भारत में मात्र मुट्ठी भर नए पोलियो पीड़ित परिवार ही हैं। देश में पोलियो उन्मूलन के गंभीर प्रयासों के बाद, स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता हर दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं, इस रोग की रोकथाम संबंधी लाखों टीका प्रतिरक्षीकरण किया जा रहा है, एवं केवल चार देशों – भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं नाईजीरिया मे अरबों डॉलर खर्च हो रहे हैं। भारत में, अधिक जोखिम वाले गांवों एवं परिवारों को हर महीने एक पोलियो कार्यकर्ता के आने की उम्मीद होती है। समुदाय के नेता, पत्रकार एवं धार्मिक नेता परिवारों से पोलियो का टीका लेने का अनुरोध कर रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 2009 में संचालित पोलियो उन्मूलन संबंधी एक स्वतंत्र मूल्यांकन के माध्यम से देश में आने वाली प्रमुख बाधाओं पर व्यापक रूप से विचार किया गया। रिपोर्ट के निष्कर्षों के अनुसार, भारत में बिहार एवं उत्तर प्रदेश की आबादियों में पोलियो का उच्च संचरण प्रमुख चुनौती थी, जिसे टीके के निम्न सीरो रूपांतरण स्तर (–80% टाईप 1 की तीन खुराक के बाद) पर सेट करके देखा गया।

जून 2011 के अंत में, दुनिया में 241 मामलों (216 जंगली पोलियो वायरस टाइप 1 व 25 जंगली पोलियो टाइप 3) की सूचना प्राप्त हुई। इसकी तुलना मई 2010 के अंत में दर्ज 456 मामलों (399 जंगली पोलियो वायरस टाइप 1 व 57 जंगली पोलियो टाइप 3) से की गयी। पोलियो के मामले चार स्थानिकमारी वाले देशों – पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नाईजीरिया एवं भारत से प्राप्त हुए। भारत में, इस वर्ष जंगली पोलियो वायरस का केवल एक मामले की सूचना मिली है। यह देश के लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि है क्योंकि विगत वर्षों में यहां दुनिया में पोलियों के मामलों की बहुलता या बहुमत था।

भारत में छह महीनें से अधिक समय से एक भी मामले की सूचना नहीं है। पक्षाघात का सबसे ताजा मामला 13 जनवरी को पश्चिम बंगाल से था। भारत में पिछले आठ महीनों में पर्यावरण नमूने से किसी भी जंगली पोलियो वायरस का पता नहीं चला है। आखिरी सकारात्मक पर्यावरण नमूना नवंबर, 2010 में मुंबई से लिया गया था।

पोलियो उन्मूलन एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को जागरूक करने के उद्देश्य से भारतीय संसदीय संस्थानः जनसंख्या एवं विकास द्वारा यूनीसेफ, दिल्ली के सहयोग से राम ब्रह्मा सान्याल स्मृति सदन, पश्चिम बंगाल के 24 परगना दक्षिणी जिले में 23 जून, 2011 को पंचायती राज संस्थाओं/निर्वाचित जनप्रतिधियों के लिए एकदिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मनमोहन शर्मा
कार्यकारी सचिव
भारतीय संसदीय संसदीय संस्थान – जनसंख्या एवं विकास

स्वास्थ्य विभाग से) के लगभग 41 सदस्यों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला की शुरूआत में श्री मनमोहन शर्मा, कार्यकारी सचिव, भारतीय संसदीय संस्थानः जनसंख्या एवं विकास ने प्रतिभागियों का अभिवादन किया एवं प्रतिभागियों को कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया तथा स्वास्थ्य, जनसंख्या एवं विकास संबंधी मुद्दों के क्षेत्र में पिछले 30 वर्षों में भारतीय संसदीय संस्थानः जनसंख्या एवं विकास द्वारा किये गये पक्षसमर्थन प्रयासों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रतिभागियों से पोलियो उन्मूलन के लिए जमींनी स्तर पर काम करने की अपील की।

इस अवसर पर, श्री सी.एम. जटुआ, सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री, भारत सरकार ने कार्यशाला की भव्य सफलता की कामना करते हुए 24 परगना के एक प्रतिनिधि के रूप में संदेश दिया।

डा. सिघो राय ने पोलियो संबंधी तकनीकी मुद्दों एवं डा. दीपांकर, क्षेत्रीय अधिकारी, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पश्चिम बंगाल तथा अन्य राज्यों में पोलियो की स्थिति का उल्लेख करते हुए अपने–अपने प्रस्तुतीकरण दिये। एक अन्य प्रस्ततीकरण में, डा. अनिरूध सेन गुप्ता वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी ने पश्चिम बंगाल एवं 24 परगना के दक्षिणी जिले में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम की प्रगति पर प्रकाश डाला। डा. गुप्ता ने सामाजिक जुटाव विशेष रूप से कमज़ोर लोगों के विकास की दिशा में अतिरिक्त कदम उठाने पर जोर दिया। इस अवसर पर यूनीसेफ द्वारा पोलियो पर बनाई गयी एक फिल्म भी दिखाई गयी।

श्री दीपक गुप्ता, रणनीतिक संचार एवं पक्षसमर्थन विशेषज्ञ द्वारा भारत में पोलियो की खतरनाक स्थिति पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया गया। उन्होंने प्रतिभागियों से अपने संबंधित क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं के बारे में अपने विचार व्यक्त करने का अनुरोध किया।

श्री एस.के. अब्दुल रज्ज़ाक, सहकारी सभाधिपति पठान प्रतिमा पंचायत समिति; श्रीमती रानी बाला गौर ज़िला परिषद सदस्या एवं श्रीमती सुरंजना चक्रवर्ती जिला कर्मा दुखा द्वारा कार्यशाला की विषयवस्तु की सराहना करते हुए अपने संबंधित क्षेत्रों में पोलियो तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर अपने–अपने विचार व्यक्त किये गये। प्रतिभागियों ने भारतीय संसदीय संस्थानः जनसंख्या एवं विकास से निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए जमीनी स्तर पर ऐसी कार्यशालाएं आयोजित करने का भी अनुरोध किया, ताकि वे अपने संबंधि

चित्रों में (उपर से): श्रीमति शमीमा शेख, श्री एम. मंडल डा. शिखा अधिकारी, डा. तरुण रॉय, श्री निर्मल चन्द मंडल श्रीमति रानी बाला गौर एवं श्रीमति मोनिता साहा।

उपर चित्रों में: श्री दीपक गुप्ता, डा. रॉड करटिस, डा. जे.वी. रॉय एवं डा. एस.के. अब्दुल रज्ज़ाक

क्षेत्रों में जिला स्वास्थ्य कार्यक्रमों, विशेष रूप से जनसंख्या स्थिरीकरण तथा स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के समुचित कार्यान्वयन की दिशा में अपनी भूमिका एवं ज़िम्मेदारियों को समझने में सक्षम हो सकें।

विशेषज्ञों के साथ बातचीत के दौरान, प्रतिभागियों ने पल्स पोलियो एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की कमी तथा अपने संबंधित क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं का उल्लेख करते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

प्रतिभागियों द्वारा दिये गये सुझाव

"पल्स पोलियो कार्यक्रम ज़रूरी है। अधिकांश जागरूक नागरिकों को इसकी समझ है परन्तु समाज के कुछ पिछड़े वर्ग इसके प्रति जागरूक नहीं हैं। ऐसे लोगों को जागरूक बनाने के लिए, हम इस जागरूकता कार्यक्रम में एकत्र हुए हैं। इसी तरह, ऐसे अभिविन्यास कार्यक्रमों के आयोजन एवं पर्चा वितरण इत्यादि के माध्यम से ग्राम पंचायत के सभी स्तरों तक पहुंच होनी चाहिए ताकि प्रत्येक गांव का हर बच्चा बहुमूल्य पोलियो की बूंदों से वंचित न रहे।" अरविंदो मंडल, उपाध्यक्ष, डायमंड हार्बर द्वितीय पंचायत समिति।

"गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले लोगों के लिए न्यूनतम बुनियादी सुविधाओं जैसे पेय जल, राशन कार्ड, यातायात के साधनों की आवश्यकता होती है। जिस तरह पर्यावरण की स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए, उन्हें शौचालय की सुविधाएं दी जाती हैं, ठीक उसी तरह स्वस्थ समाज को ध्यान में रखते हुए पोलियो की खुराक अनिवार्य होनी चाहिए।" अहमद, कार्यकारी अध्यक्ष, माथुरापुर द्वितीय पंचायत समिति।

"पोलियो रोग के उन्मूलन के लिए, सबसे पहले महोकुमा एवं ब्लॉक स्तरों पर बैठकें आयोजित हों, उसके बाद धार्मिक स्तर तथा अन्त में निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को पल्स पोलियो मिशन के बारे में स्थानीय समितियों के साथ योजना बनानी चाहिए।" – मताई, सदस्य – 23/6, दक्षिणी 24 परगना जिला परिषद।

"यह अधिक प्रभावी हो सकता है यदि इस कार्यक्रम को पंचायत स्तर पर आयोजित किया जाए।" प्रकाश चौधरी मंडल।

"पोलियो कार्यक्रम मिशन को सफल बनाने के लिए प्रत्येक केंद्र में एकीकृत बाल विकास योजना कर्मचारी/कार्यकर्ता एवं ग्राम पंचायत के निर्वाचित सदस्यों के साथ–साथ स्थानीय क्लब समिति सदस्य होने चाहिए।" सनत सरकार, कार्यकारी अध्यक्ष, माथिरापुर।

"प्रत्येक गांव के सभी स्तरों पर, यदि महिलाओं, छात्रों, युवाओं, प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों, जन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को इस जागरूकता फैलाने संबंधी कार्यक्रम में शामिल किया जाता है, तो उम्मीद है कि इस दिशा में सकारात्मक परिणाम हासिल हो सकते हैं।" – कृष्ण घोष।

"पोलियो के उन्मूलन के लिए, पोलियो न्यूनीकरण कार्यक्रम के सभी स्तरों पर निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को शामिल करना आवश्यक है। सरकारी स्वास्थ्य कार्यकर्ता, स्वैच्छिक संगठन, स्कूली छात्रों को पोलियो रोग के प्रति जागरूकता पर जोर देना चाहिए। यह अनिवार्य होना चाहिए कि जो बच्चा पोलियो की खुराक न ले रहा हो, वह राशन कार्ड के लिए हकदार नहीं होगा।" – सक्तो साधन घोष, सचिव, घाटापुर अरिहतो संघ।

कार्यशाला में प्रतिभागी।

"पोलियो कार्यक्रम एवं इससे संबंधित गतिविधियों पर नियमित रूप से चर्चा आयोजित होनी चाहिए। विभिन्न राजनीतिक समूह सड़क निर्माण, ट्यूबवेल लगाने आदि जैसी झूठी प्रतिबद्धताओं के नाम पर गरीब वर्ग को भड़काते हैं। इन सभी से दृढ़तापूर्वक निपटा जाना चाहिए। उन्हें स्वच्छता के प्रति प्रेरित किया जाना चाहिए। पोलियो रोग के बुरे प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलानी जरूरी है। विद्यालय स्तर पर, इस मुद्दे से संबंधित कार्यशाला आयोजित की जा सकती है। इस संबंध में पहल द्वारा हम हर तरह से इसमें मदद करते हैं।" – विनोद कुमार सरदार, उपाध्यक्ष, माथुरापुर द्वितीय पंचायत समिति।

उपर चित्रों में: डा. दीपांकर मुखर्जी, डा. अनुरुधसेन गुप्ता, श्री मनमोहन शर्मा एवं डा. संजय बोस।

(उपर चित्रों में)
कार्यशाला में प्रतिभागी विचारों का आदान प्रदान करते हुऐ।

(नीचे)
कार्यशाला की झलकियाँ।

"पोलियो कार्यक्रम की सफलता के लिए हर परिवार को उचित स्वच्छता, सुरक्षित पेयजल एवं पोलियो के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए, ऐसा प्रत्येक एकल परिवार को पर्चा वितरण के माध्यम से हासिल किया जा सकता है।" – सत्येन अधिकारी, प्रधान, केवोरातला जी.पी. कुल्पी ब्लॉक।

"छोटे एवं हाथ से बाँटे गये इन पर्चों के माध्यम से नयी माताओं तक पोलियो की बूंदों के गुण व दोष पहुंचते हैं एवं इसे और अधिक कार्यात्मक बनाते हैं। यदि पोलियो कार्ड जारी करने के लिए राशन कार्ड का होना अनिवार्य कर दिया जाए तो यह कदम कारगर साबित हो सकता है।" – सुखेन्दु नासकर, विष्णुपुर आईपीएस।

"पोलियो की खुराक के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक बनाने के लिए युवा एवं नये माता–पिता को पंचायत स्तर पर तस्वीरें या पत्रक/पर्चे बाँटे जाने चाहिए।" – अपर्णा संदन।

"पोलियो कार्यक्रम संबंधी पूरा खर्चा करने के बजाय, यदि पोलियो कार्यक्रम के दिन एक टोकन राशि ही दी जाए, तो इससे अधिक से अधिक बच्चों को कवर किया जाएगा।" – पूर्णिमा प्रमाणिक।

"मैं पंचायत स्तर पर सभी आंगनवाड़ी एवं स्वास्थ्य कार्यकताओं की सहायता से भविष्य में पोलियो रोग को दूर करने की आशा करती हूँ। मैं सभी सार्वजनिक प्रतिनिधियों एवं स्थानीय क्लब के नेताओं से इस दिशा में सक्रिय पहल करने की अपील करती हूँ। इसके अलावा, पोलियो बूस्टर दूध या हलवे या किसी छोटे उपहार के साथ बच्चे को दिया जाए ताकि माताएं इसमे अधिक रूचि लें या पोलियो शिविरों की ओर आकर्षित हों।" – मनोआरा बेगम, मायापुर जी.पी., बज़ बज़।

"एक राष्ट्र को स्वस्थ बनाने के लिए, माताओं एवं बहनों को धैर्यपूर्वक सुनना होगा। हमारे प्रत्येक बच्चे के लिए पोलियो की दो बूंदें अत्यावश्यक हैं। आओ, अपने बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए पोलियो बूथ में जरूर जाएं।" – हरिदास नासकर, सोनारपुर।

"मेरा मानना है कि समाज को पोलियो रोगमुक्त करने के लिए सूचना, शिक्षा एवं संचार को अधिक महत्व दिया जाए। वर्तमान में, यूनीसेफ एवं राज्य स्तर पर रोटरी (4–5 दिन पहले) द्वारा भेजे गये पोस्टर, बैनर एवं अन्य सामग्रियां हैं। यह व्यवस्था कम से कम 15 दिन पहले की जानी चाहिए। विद्यालय एवं क्लब के बच्चे कार्यक्रम के बारे में जारूकता फैलाने के लिए रोड़ शो तथा कला प्रतियोगिताओं का आयोजन कर सकते हैं।" – काजल पाल, कार्यकर्ता, सीएमएचओ कार्यालय।

"एक राष्ट्र को पोलियो रोगमुक्त बनाने के लिए, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के साथ–साथ जन प्रतिनिधियों को सभी स्तरों पर ईमानदारी से काम करना होगा। दोनों स्तरों पर, पंचायतों को जागरूकता शिविरों का आयोजन करना चाहिए। 9वीं एवं 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को कार्यक्रम के प्रति जागरूक बनाना एवं कार्यक्रम में शामिल करना होगा। जांच–पड़ताल के लिए क्षेत्रवार कार्यदल समितियों का गठन किया जाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को कार्यक्रम के मिशन को सफल बनाने की दिशा में पहल करनी चाहिए।" – रवीन्द्रनाथ बेरा।

जनसंदेश

संपादक
मनमोहन शर्मा

जनसंदेश एक द्विमासिक पत्रिका है

भारतीय संसदीय संस्थान – जनसंख्या एवं विकास
(संयुक्त राष्ट्र के साथ विशेष परामर्शदाता स्थिति)
1/6, सीरा इन्सटीटयूशनल एरिया, खेल गॉव मार्ग, नई दिल्ली–110049
दूरभाष: 011–4165661/68/69/76, फैक्स: 011–41656660
ई.मेल: iappd@airtelmail.in, वेब साईट: www.iappd.org